

MS. BACHENDRI PAL

Ms. Bachendri Pal is the Chief of Adventure Programmes at Tata Steel Jamshedpur and is also the Director of the Tata Steel Adventure Foundation (TSAF), a premier Institute in India promoting Adventure Programmes & Leadership Development courses among youth and women as well as corporates, Institutes and other organizations. She is widely recognized for her pioneering role in planning, organizing & leading pathbreaking expeditions for women. She is also known for her innovative pursuits over three decades in developing Leadership skills through Adventure Expeditions. The Prime mover of any organization,society or nation is its people and she has made many a leader benefiting them and in turn those whose lives they have touched.

2. Born on 24 May 1954, in Uttarkashi, Ms. Pal did her Bachelor's Degree in 1978 and Master's Degree in 1979 both from Garhwal University. She completed the Outdoor Educators' Course from Sir Edmund Hillary Outdoor Pursuit Centre in New Zealand and pursued Leadership development Programmes from the Outward Bound Trust Ullswater Cumbria UK & NOLS USA. She has also visited many outdoor schools around the World, that have helped her develop, design and deliver Leadership Skills to professionals, management/technical students, rural youth and the underprivileged.

3. Similar to the Himalayan Mountaineering Institute Darjeeling which was instituted to commemorate mountaineering legend Tenzing Norgay's achievement, the TSAF came into existence after Ms Pal's return from the historic Everest 1984 Expedition, underlying the visionary leadership of Tata Steel. She has been its Director for more than three decades. From humble beginnings when she struggled to get women to come outdoors she has provided exemplary leadership, which saw India having the maximum number of women Everest summiteers in the World i.e. eight with the epic Indo-Nepalese Women's Everest Expedition creating seven World Records overall. Another epic that she helmed was the Indian Women's Trans Himalayan Journey1997(world's first complete east to west traverse) a continuous trek across the Himalaya from Arunachal Pradesh to Siachen, a stupendous 4500 km over seven months of inspired human endurance by nine Indian Women crossing 40 high mountain passes ranging from 12000 to 20000 feet.

4. Ms Pal has made TSAF an institute of excellence for not only mountaineering and adventure programmes but also propogating expedition method for learning on 'HOW TO BE A LEADER' using the model of seven leadership skills and four leadership roles, as well as custom made models.She was an Executive Council Member of Nehru Institute of Mountaineering Uttarkashi, the Himalayan Mountaineering Institute Darjeeling and Life Member of both. She was a Central Selection Committee member of the Tenzing Norgay National Adventure Award,a member of the National Youth Council, a member of the National Perspective Plan Committee for Youth as well as a Gen. Body member of Sports Authority of India. She is also a member of Explorer's Club New York, Fellow member of the Royal Geographical Society, UK and member of the India International Centre, New Delhi. In her quest to see more people reach the highest Summit, she continued giving training and facilitating for funds from Tata Steel, which eventually saw a total of 10 different persons Summit Everest, including Arunima Sinha who became the first female amputee in the world to do so in 2013, Premlata Agrawal a mother, the only woman her age in India to reach the Top in 2011 (both received Padma Shri) and Binita Soren, the first Adivasi girl atop Everest in 2012.

5. Ms. Pal received Padma Shri in 1984 and Arjuna Award in 1985 – both for her Everest 1984 achievement. She also received Gold Medal for Excellence in mountaineering from Indian Mountaineering Foundation and the 1st CSR Review Gold Medal both in 1984. In 1985 she received the National Youth Award,the Gold Medal from the Dept. of Education Uttar Pradesh, and Kolkata Sports Journalist Award.In 1990 she received the FIE Foundation National Award from the Prime Minister. She received the First National Adventure Award (now known as Tenzing Norgay National Adventure Award) in 1994 for leading the first ever International Women's Team (The Indo Nepalese Women's Everest Expedition 1993) to seven world records in the very first attempt and ensured other 21 members also receive the First National Adventure Award along with her. She received the Yash Bharti National Award from the Uttar Pradesh Government in 1995. In 1997, she received People of the Year Award from Limca Book of Records, an Honorary DLitt from the University of Garhwal and Mahila Shiromani Award. She received the Virangana Laxmibai National Award from the Madhya Pradesh Government in 2013. She has also received the 'First ladies' award from Ministry of Women and Child Development in January 2018 at Rashtrapati Bhawan.

सुश्री बचेन्द्री पाल



सुश्री बचेन्द्री पाल टाटा स्टील जमशेदपुर में एडवेंचर प्रोग्राम्स की प्रमुख हैं और साथ ही टाटा स्टील एडवेंचर फाउंडेशन (टीएसएएफ) की निदेशक भी हैं जो कि भारत में युवाओं और महिलाओं के साथ-साथ कॉरपोरेट्स संस्थानों और अन्य संगठन में एडवेंचर प्रोग्राम और लीडरशिप डेवलपमेंट कोर्स को बढ़ावा देने वाला एक प्रथम संस्थान है। आप व्यापक रूप से महिलाओं के लिए पर्वतारोही अभियानों की योजना बनाने और उसकी व्यवस्था करने में अपनी अग्रणी पथप्रदर्शक की भूमिका के लिए जानी जाती हैं। आप तीन दशकों से एडवेंचर अभियानों के माध्यम से लीडरशिप स्किल्स विकसित करने के लिए भी जानी जाती हैं। किसी भी संगठन, समाज या राष्ट्र के मुख्य प्रेरणास्रोत उसके अपने ही लोग होते हैं और आपने ऐसे बहुत से लोगों को पथप्रदर्शक बना दिया है जिन्होंने स्वयं अपने आस-पास के उन लोगों के जीवन में बदलाव ला दिया जो उनके संपर्क में आए।

2. आपका जन्म 24 मई 1954 में उत्तरकाशी में हुआ था। आपने वर्ष 1978 में स्नातक और वर्ष 1979 में स्नातकोत्तर की डिग्री गढ़वाल विश्वविद्यालय से प्राप्त की। आपने सर एडमंड हिलेरी आउटडोर परस्यूट सेंटर, न्यूजीलैंड से आउटडोर एजूकेटर्स कोर्स किया तथा आउटवर्ड बाउंड ट्रस्ट उल्सवाटर कुम्ब्रिया, यूनाईट किंगडम व एनओएलएस, अमेरिका से लीडरशिप डेवलपमेंट प्रोग्राम्स पूरे किए। आपने विश्व भर के कई आउटडोर स्कूलों का भी दौरा किया, जिससे आपको पेशेवरों, प्रबंधन/तकनीकी छात्रों, ग्रामीण युवकों तथा वंचितों के लिए नेतृत्व कौशल का विकास करने, उनके लिए डिजाइन तैयार करने और उसका संवर्धन करने में मदद मिली।

3. हिमालयन पर्वतारोहण संस्थान, दार्जिलिंग जिसे पर्वतारोही तेनजिंग नोर्गे की उपलब्धि के उपलक्ष्य में स्थापित किया गया था, की भांति टाटा स्टील एडवेंचर फांउडेशन भी वर्ष 1984 में आपकी ऐतिहासिक एवरेस्ट अभियान से वापसी के पश्चात् अस्तित्व में आया और तब से टाटा स्टील आपके दूरदर्शितापूर्ण नेतृत्व को साकार रूप दे रहा है। आप तीन दशकों से अधिक समय तक इस संस्थान की निदेशक रही हैं। जब आप महिलाओं को घर से बाहर लाने के लिए संघर्षरत थीं तभी से आपने एक अनुकरणीय नेतृत्व प्रदान करते हुए यह दिखा दिया कि विश्व में ऐसे अभियानों में एवरेस्ट शिखर पर पहुंचने वाली महिलाओं की सबसे ज्यादा संख्या भारत की हैं जिसमें स्मरणीय इंडो-नेपाली महिला एवरेस्ट अभियान के आठ सदस्य रहे जिन्होंने कुल मिलाकर सात विश्व रिकार्ड बनाए। एक अन्य महान उपलब्धि के अंतर्गत, आपने वर्ष 1997 में भारतीय महिलाओं की ट्रांस हिमालयन जर्नी (दुनिया की पूर्व से पश्चिम की ओर प्रथम संपूर्ण साहसिक यात्रा) का नेतृत्व किया जो कि अरुणाचल प्रदेश से सियाचिन तक हिमालय पर एक सतत् साहसिक ट्रैक था और इस 12000 से 20000 फीट तक ऊंचे 40 पर्वत मार्गों के बीच से गुजरने वाले 4500 किमी लंबे सफर को नौ भारतीय महिलाओं द्वारा प्रेरणास्पद मानवीय सहनशक्ति का परिचय देते हुए सात महीनों में पूरा किया गया।

4. आपने टीएसएएफ को न केवल पर्वतारोहण और साहसिक कार्यक्रमों के लिए एक उत्कृष्ट संस्थान बनाया, बल्कि अन्य आदर्शों के साथ-साथ नेतृत्व की सात कौशल कलाओं तथा चार भूमिकाओं के मॉडल का उपयोग करते हुए 'हाउ टू बी ए लीडर' के बारे में सीखने वाली अभियान पद्धति का भी प्रचार किया है। आप नेहरू इंस्टीट्यूट ऑफ माउंटेनियरिंग उत्तरकाशी, हिमालयन माउंटेनियरिंग इंस्टीट्यूट, दार्जिलिंग कार्यकारी सदस्य एवं लाइफ मेम्बर रहीं हैं। आप तेनजिंग नोर्गे नेशनल एडवेंचर अवार्ड की केंद्रीय चयन समिति की सदस्य, राष्ट्रीय युवा परिषद की सदस्य, युवाओं के लिए नेशनल पर्सपेक्टिव प्लान कमेटी की सदस्य और भारतीय खेल प्राधिकरण की जनरल बॉडी सदस्य भी रहीं। आप एक्सप्लोरर क्लब न्यूयॉर्क, रॉयल जियोग्राफिकल सोसायटी, इंग्लैंड की फैलो और इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली की भी सदस्य हैं। सर्वोच्च शिखर पर और अधिक लोगों के पहुंचने की आपकी अभिलाषा से आपने प्रशिक्षण देना और टाटा स्टील से निधि उपलब्ध करवाने का कार्य जारी रखा। जिससे अंततः, 10 अलग-अलग व्यक्तियों ने एवरेस्ट शिखर को फतह किया जिसमें वर्ष 2013 में अरुणिमा सिन्हा दुनिया की पहली दिव्यांग महिला पर्वतारोही बन गई तथा वर्ष 2011 में प्रेमलता अग्रवाल, एक मां, शिखर पर पहुंचने वाली भारत की एकमात्र महिला थीं (दोनों ने पद्म श्री प्राप्त किया) और वर्ष 2012 में बिनीता सोरेन एवरेस्ट की शिखर फतह करने वाली पहली जनजातीय युवती बनी।

5. आपको वर्ष 1984 में पद्मश्री और वर्ष 1985 में अर्जुन पुरस्कार - दोनों वर्ष 1984 में एवरेस्ट में फतह के लिए मिले। आपने वर्ष 1984 में इंडियन माउंटेनियरिंग फाउंडेशन से पर्वतारोहण में उत्कृष्टता के लिए गोल्ड मेडल और प्रथम सीएसआर रिव्यू गोल्ड मेडल प्राप्त किए। आपको वर्ष 1985 में नेशनल यूथ अवार्ड, शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश का गोल्ड मेडल और कोलकाता स्पोर्ट्स जर्नलिस्ट अवार्ड मिला। वर्ष 1990 में आपको प्रधान मंत्री से एफआईई फाउंडेशन राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। आपको पहले अंतर्राष्ट्रीय महिला टीम (इंडो नेपाली महिला एवरेस्ट अभियान 1993) का नेतृत्व करने के लिए वर्ष 1994 में पहली बार में ही सात विश्व रिकॉर्ड बनाने के लिए पहला राष्ट्रीय साहसिक पुरस्कार (अब तेनजिंग नोर्गे राष्ट्रीय साहसिक पुरस्कार के रूप में जाना जाता है) मिला तथा आपने यह भी सुनिश्चित किया कि दल के सभी 21 सदस्यों को भी आपके साथ ही प्रथम राष्ट्रीय साहसिक पुरस्कार प्राप्त हो। आपको वर्ष 1995 में उत्तर प्रदेश सरकार से यश भारती राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। वर्ष 1997 में आपको लिम्का बुक ऑफ़ रिकॉर्ड्स से पीपुल ऑफ़ द ईयर अवार्ड, गढ़वाल विश्वविद्यालय से मानद डी.लिट और महिला शिरोमणि पुरस्कार प्राप्त हुआ। आपको वर्ष 2013 में मध्य प्रदेश सरकार से वीरांगना लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। आपको जनवरी 2018 में महिला और बाल विकास मंत्रालय से राष्ट्रपति भवन में 'प्रथम महिला' पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।